गिल्लू

कक्षा - नवी

विषय – हिंदी
पाठ : ३
पाठ का नाम :गिल्लू
PPT-2

CHANGING YOUR TOMORROW

Website: www.odmegroup.org
Email: info@odmps.org
Toll Free: 1800 120 2316
Sishu Vihar, Infocity Road, Patia, Bhubaneswar- 751024

छात्रों द्वारा पाठ का पठन अभ्यास / अर्थबोध सहित करना ।

1.सोनजुही में आज एक पीली …………………………चौंकाने ऊपर आ गया हो!

शब्दार्थ – असोनजुही - जूही (पुष्प) का एक प्रकार जो पीला होता है

अनायास - अचानक

हरीतिमा - हरियाली

लघुप्राण - छोटा जीव

व्याख्या - लेखिका कहती है कि आज जूही के पौधे में कली निकल आई है जो पिले रंग की है। उस कली को देखकर लेखिका को उस छोटे से जीव की याद आ गई जो उस जूही के पौधे की हरियाली में छिपकर बैठा रहता था और जब लेखिका उसके नजदीक पहुँचती तो वह लेखिका का कंधे पर कूदकर लेखिका को चौंका देता था। समय लेखिका को उन पीली कलियों की तलाश रहती थी परन्तु आज छोटे से जीव की तलाश रहती है। परन्तु लेखिका कहती है कि अब तो वह छोटा जीव इस जूही के पौधे की जड़ में मिट्टी बन कर मिल गया होगा। लेखिका यह भी अंदाजा लगाती है कि क्या पता वह उस पीली कली के रूप में आकर लेखिका को चौंकाने के लिए ऊपर आ गया हो। यहाँ लेखिका अपनी पालतू गिलहरी के बारे बात कर रही है जो अब मर चुकी है और लेखिका ने उसे जूही के पौधे की जड़ में दबा दिया था।

2. अचानक एक दिन सवेरे ……………… अवमानना के अर्थ में ही प्रयुक्त करते हैं।

शब्दार्थ – छूआ-छुऔवल - चुपके से छूकर छुप जाना और फिर छूना

काकभुशुंडि - (रामायण) एक राम भक्त जो लोमश ऋषि के शाप से कौआ हो गए थे

समादरित - विशेष आदर

अनादरित - आदर का अभाव, तिरस्कार

अवतीर्ण - प्रकट

कर्कश - कटु, कानों को न भाने वाली

व्याख्या - लेखिका कहती है कि अचानक एक दिन जब वह सवेरे कमरे से बरामदे में आई तो उसने देखा कि दो कौवे एक गमले के चारों ओर चोंचों से चुपके से छूकर छुप जाना और फिर छूना जैसा कोई खेल खेल रहे हैं। लेखिका कहती है कि यह कौवा भी बहुत अनोखा पक्षी है-एक साथ ही दो तरह का व्यवहार सहता है, कभी तो इसे बहुत आदर मिलता है और कभी बहुत ज्यादा अपमान सहन करना पड़ता है। जैसे हमारे बेचारे पुरखे न गरुड़ के रूप में आ सकते हैं, न मयूर के, न हंस के। उन्हें पितरपक्ष में हमसे कुछ पाने के लिए कौवा बनकर ही प्रकट होना पड़ता है। इतना ही नहीं हमारे दूर रहने वाले रिश्तेदारों को भी अपने आने का सुखद संदेश इनके कानों को न भाने वाली आवाज में ही देना पड़ता है। वही जहाँ एक ओर कौवे को इतना आदर मिलता है वहीं दूसरी ओर हम कौवा और काँव-काँव करने को अपशगुन के अर्थ में भी प्रयोग करते हैं। और कौवे को अपने आँगन से भगा कर उसका अपमान भी करते हैं।

3. मेरे काकपुराण ....निश्चेष्ट-सा गमले से चिपटा पड़ा था।

शब्दार्थ -

संभवतः - अवश्य ही

सुलभ - आसान

काकद्वय - दो कौए

निश्चेष्ट - बिना किसी हरकत के

व्याख्या - लेखिका कहती है कि जब वह कौवो के बारे में सोच रही थी तभी अचानक से उसकी उस सोच में कुछ रुकावट आ गई क्योंकि उसकी नजर गमले और दीवार को जोड़ने वाले भाग में छिपे एक छोटे-से जीव पर पड़ी। जब लेखिका ने निकट जाकर देखा तो पाया कि वह छोटा सा जीव एक गिलहरी का छोटा-सा बच्चा है जो अवश्य ही अपने घोंसले से नीचे गिर पड़ा है और अब कौवे उसमें अपना आसान भोजन खोजते हुए उसे चोट पहुँचा रहे हैं। उस छोटे से जीव के लिए उन दो कौवों की चोंचों के दो घाव ही बहुत थे, इसलिए वह बिना किसी हरकत के गमले से लिपटा पड़ा था।

4. सबने कहा, कौवे की चोंच .... आँखें सबको विस्मित करने लगीं।

शब्दार्थ -

हौले - धीरे

आश्वस्त - निश्चिन्त

स्निग्ध् - चिकना

विस्मित - आश्चर्यचकित

व्याख्या - लेखिका कहती है कि उस गिलहरी के बच्चे की इतनी खराब हालत देख कर सबने कहा, कौवे की चोंच का घाव लगने के बाद यह नहीं बच सकता, इसलिए इसे ऐसे ही रहने दिया जाए। परंतु लेखिका का मन नहीं माना लेखिका ने उसे धीरे से उठाया और अपने कमरे में ले गई, फिर रुई से उसका खून साफ़ किया और उसके जख्मों पर पेंसिलिन नामक दवा का मरहम लगाया। फिर लेखिका ने रुई की पतली बत्ती बनाई और उसे दूध से भिगोकर जैसे-जैसे उसके छोटे से मुँह में दूध पिलाने के लिए लगाई तो लेखिका ने देखा कि वह मुँह नहीं खुल पा रहा था और दूध की बूँदें मुँह के दोनों ओर ढुलक कर गिर गईं।

कई घंटे तक इलाज करने के बाद उसके मुँह में एक बूँद पानी टपकाया जा सका। तीसरे दिन वह इतना अच्छा और निश्चिन्त हो गया कि वह लेखिका की उँगली अपने दो नन्हे पंजों से पकड़कर और अपनी नीले काँच के मोतियों जैसी आँखों से इधर-उधर देखने लगा। लेखिका ने उसका अच्छे से ध्यान रखा जिसके परिणाम स्वरूप तीन-चार महीनों में उसके चिकने रोएँ, झब्बेदार पूँछ और चंचल चमकीली आँखें सबको हैरान करने लगी थी। अर्थात वह बहुत आकर्षक बन गया था।

5. हमने उसकी जातिवाचक संज्ञा……………………सब को आश्चर्य होता था।

शब्दार्थ -

कार्यकलाप - दिन भर के काम

आश्चर्य - हैरान

व्याख्या - लेखिका कहती है कि उसने उस गिलहरी को केवल अब एक जाति न रख कर व्यक्तिवाचक कर दिया था अर्थात उसने अब उसका नाम रख दिया था। सब उसे अब गिल्लू कह कर पुकारते थे। लेखिका ने एक फूल रखने की हलकी सी डाली में रुई बिछाई और एक तार की मदद से उसे खिड़की पर टाँग दिया। दो साल तक यही फूल रखने की हलकी डाली ही गिल्लू का घर थी। लेखिका कहती है कि वह खुद से ही अपने इस घर को झुलाता और झूलने के मज़े लेता और काँच के गोलों के समान अपनी सुंदर आँखों से न जाने खिड़की से बाहर क्या देखता था और न जाने क्या समझता था। परन्तु उसकी समझदारी और दिन भर के उसके सभी कामों को देख कर सभी हैरान हो जाते थे।

6. जब मैं लिखने बैठती ………………………… मेरा कार्यकलाप देखा करता।

शब्दार्थ -

सर्र से - तेज़ी से

लघुगात - छोटा शरीर

अद्भुत - अनोखी

व्याख्या - लेखिका कहती है कि जब वह लिखने बैठती थी तब अपनी ओर लेखिका का ध्यान आकर्षित करने की गिल्लू की इतनी तेज इच्छा होती थी कि उसने एक बहुत ही अच्छा उपाय खोज निकाला था। वह लेखिका के पैर तक आता था और तेज़ी से परदे पर चढ़ जाता था और फिर उसी तेज़ी से उतर जाता था। उसका यह इस तरह परदे पर चढ़ना और उतरने का क्रम तब तक चलता रहता था जब तक लेखिका उसे पकड़ने के लिए नहीं उठती थी। लेखिका गिल्लू को पकड़कर एक लंबे लिफ़ाफ़े में इस तरह से रख देती थी कि उसके अगले दो पंजों और सिर के अलावा उसका छोटा सा पूरा शरीर लिफ़ाफ़े के अंदर बंद रहता था। इस तरह बंद रहने के कारण वह फिर से उछाल-कूद करके लेखिका को परेशान नहीं कर पाता था। इस अनोखी स्थिति में भी कभी-कभी घंटों मेज पर दीवार के सहारे खड़ा रहकर गिल्लू अपनी चमकीली आँखों से लेखिका को देखता रहता था कि लेखिका क्या-क्या काम कर रही है।

THANKING YOU

ODM EDUCATIONAL GROUP